लक्ष्मी अन्तराय के कारण

प्रो. (डॉ.) सोहन राज तातेड़,

पूर्व कुलपति सिंघानिया विश्वविद्यालय, राजस्थान

लक्ष्मी का अर्थ है– धन की अधिष्ठात्री देवी। लक्ष्मी चंचला होती है। सम्पूर्ण धन–दौलत लक्ष्मी की कृपा से ही प्राप्त होता है। भौतिक जगत में धन का महत्वपूर्ण स्थान है। धन के बिना जीवन नहीं चल सकता। व्यावहारिक जीवन में पग–पग पर धन की आवश्यकता होती है। भारतीय संस्कृति में जीवन के पुरुषार्थों में धन का भी महत्वपूर्ण स्थान है। जीवन के चार पुरुषार्थ माने गये हैं– धर्म, अर्थ, काम और मोक्ष। अर्थ का सम्बन्ध धन से है। अर्थ को परिश्रम से अर्जित किया जाना चाहिए। लूटपाट करके अर्जित किया हुआ धन विनाश का कारण होता है। कभी–कभी धन प्राप्त करने का उपक्रम करने के बाद भी धन की प्राप्ति नहीं हो पाती है। इसका क्या कारण है? दार्शनिक भाषा में लक्ष्मी की प्राप्ति न होने का करण है अन्तराय कर्म। हमारे पूर्व जन्म के किये हुए कर्मों के कारण वर्तमान जन्म में अन्तराय उपस्थित हो जाता है। अन्तराय के कारण लक्ष्मी की प्राप्ति नहीं होती है।

कर्म आठ प्रकार के हैं– ज्ञानावरणीय, दर्शनावरणीय, वेदनीय, मोहनीय, आयुष्य कर्म, नामकर्म, गौत्रकर्म और अन्तराय कर्म। दान, लाभ, भोग, उपभोग, वीर्यान्तराय, दान लेने देने में बाधा डालने पर अन्तराय उत्पन्न होता है। दान में बाधा डालने के कारण दानान्तराय होता है। लाभ में बाधा डालने के कारण लाभान्तराय होता हे। भोग–उपभोग में बाधा डालने के कारण भोगान्तराय होता है। वीर्यान्तराय करण वीर्य और लब्धि वीर्य दो प्रकार का है। करण वीर्य शरीर से सम्बन्धित है और लब्धि वीर्य आत्मा से सम्बन्धित है। किसी व्यक्ति ने पूर्व जन्म में किसी के कार्य में बाधा डाली है तो वह इस जन्म में उसका परिणाम भुगताने के लिए उसे किसी न किसी रूप में अवश्य प्राप्त होगा। वर्तमान शरीर पूर्वार्जित कर्मों के भुगतान के लिए है। पूर्व जन्म में हमने जैसा बीज बोया है उसका परिणाम इस जन्म में अवश्य प्राप्त होता है। बीज बोने में हम स्वतंत्र हैं, किन्तु सुख–दुःख रूप फल प्राप्त करने में हम स्वतंत्र नहीं है। कर्म का परिणाम जैसा है उसी रूप में भुगतना पड़ता है।

अन्तराय का अर्थ है विघ्न उपस्थित करना। इस कर्म के उदय से मानव की क्रियात्मक शक्ति पर असर पड़ता है। अभीप्सित वस्तु की प्राप्ति में बाधा पहुंचाने वाला कर्म अन्तराय कर्म कहलाता है। इस कर्म की तुलना राज्य के कोषाध्यक्ष से की जा सकती है। जिस प्रकार राजा के आदेश होने पर भी कोषाध्यक्ष के बिना वस्तु प्राप्त नहीं होती वैसे ही अन्तराय कर्म बंधन के दूर हुए बिना अभीप्सित वस्तु नहीं मिलती। आवश्यकता से अधिक संग्रह करना अतिसंग्रह है। मानव की मूलभूत आवश्यकता है रोटी, कपड़ा, शिक्षा और चिकित्सा। इसकी पूर्ति सभी को करनी चाहिए। जीवन को आराम से चलाने के लिए वस्तुओं की आवश्यकता होती है। मानव की इच्छापूर्ति न होने से वह अशांत हो जाता है। अनुकूल और प्रतिकूल परिस्थितियों में सम रहने से मानव शांति प्राप्त करता है। लोभी व्यक्ति अतिसंग्रह करता है। अतिसंग्रह करने से दूसरे व्यक्ति का हक छीना जाता है। दूसरों के अंश को छीनना, दूसरों को वंचित करना आदि कार्य अतिसंग्रह के कारण होते हैं। अतिसंग्रह करने से वस्तुओं की कमी होती है। इससे समाज में तनाव और अशांति पैदा होती है।

अधिक धन की सुरक्षा करना भी यह कठिन कार्य है। अतिसंग्रह करने से ऊंची–ऊची कई अटालिकाएं बनाकर उसकी सुरक्षा करना कठिन कार्य है। आज कहीं–कहीं ऊंची–ऊंची अटलिकाएं है तो दूसरी तरफ घासफूस की टूटी–फूटी झोंपड़ी दिखाई देती है। जब गरीब का खून चूसा जाता है तभी कोई व्यक्ति अतिसंग्रह कर सकता है। व्यक्ति को संतोष धारण करना चाहिए। संतोषरूपी धन प्राप्त हो जाने पर अन्य सभी धन धूली के समान प्रतीत होने लगते हैं। अतिसंग्रह करने वाला व्यक्ति बंधन में फंसता है। लालच के घेरे से ऐसा व्यक्ति निकल ही नहीं पाता। उसके परिवार में भी संतुलन बिगड़ जाता है।

धन के ऊपर सभी की निगाहें लगी रहती हैं। धन के बटवारें को लेकर भाईयों–भाईयों में कलह छिड़ जाती है। कलुषित मनोवृत्ति लोभ के कारण होती है। लोभ के कारण आसक्ति उत्पन्न होती है। मोह का वटवृक्ष बहुत बड़ा है। अच्छाईयां गुणों का परिवार है और बुराईयां मोह का परिवार है। धन कुछ है सबकुछ नहीं। धन एक साधन है साध्य नहीं। नियम कानून का पालन करते हुए संग्रह करना चाहिए। परिग्रह एक भावना है। परिग्रह का अर्थ है। चारों तरफ से ग्रहण करना। अपरिग्रह इसका विपरीत है। अपरिग्रह में आवश्यकता से अधिक नहीं

ग्रहण किया जाता। अतिसंग्रह करना अशांति का कारण होता है। सही तरीके से अर्जित किया गया धन परिवार, समाज और राष्ट्र की सुरक्षा कर सकता है।

अर्जन और विसर्जन संतुलन का सूत्र है। अर्जन का अर्थ है कुछ कमाना और विसर्जन का अर्थ है जो कमाया गया है उसका कुछ अंश दान में देना। मानव जीवन से लेकर प्रकृति पर्यन्त यह नियम लागू रहता है। सृष्टि में भी यह संतुलन दिखायी देता है। सम्पूर्ण सृष्टि संतुलन के आधार पर चल रही है। अगर संतुलन गड़बड़ा जाये तो जीवन में या सृष्टि में असंतुलन आजाता है। सृष्टि के असंतुलन का अर्थ है भूकम्प आजाना, सुनामी आजाना और प्रकृति का प्रकोप हो जाना। सृष्टि में सामंजस्य स्थापित करने के लिए जीवन के हर क्षेत्र में समता लाना जरूरी है। लक्ष्मी की प्राप्ति पुरुषार्थ का परिणाम है।